

काल्याणकावर्णः। ततः ४ समस्तद्वयानि, कालिकाक्रममूद्रावा ॥ विधिवत्कृत्य यन्नित्यं विधिना
 यनकावर्णनायथाशुभायदिहं तु, तदेववेगमाचरन्त ॥ यद्वगामं उच्यते, गुणद्वयनमः
 सय ४। विद्वत् ४, गुणद्वय ४, शक्तिद्वयः
 बुद्धिहृत्तव। ज्ञानमसिर्गमये, गुणद्वय
 उन्नतवयि। अमेत्यालोववत्वाच्च, गुणनि
 ति ४। समुदाहृतं ४। गुणद्वयहृत्तानां तु, निद्वयिर्ना स्त्रियावर्णः ॥ गुणद्वयवर्णाय च, देवतावर्णक
 वयं। स्त्रियावर्णकयभावायि, गुणद्वयवयवययन ॥ गुणद्वयवयवययन ॥ ॐ स्वाहायनमभ्यर्चनी ॥

मदितोयंतां, वंदो गेदं नयीयेनां ॥ ने पुं वें वें च थ ॥ वावा गेनामसायवा, माकनरुदिकियायिया ॥ एका
नीयनाविद्या, हागभाकसदाहृता ॥ गिवधकिस्मायाभदुवेंदरेयार्चनी ॥ महाकृधुलिनीयवीमः
हानावतियुजातावकिनिवाकनीगंव, कालं मेवावृणं ॥ तथा ॥ गिवावमधुहायूका, काः
लीयाधमूदाहताखरुमानकमालिख, महा चधुमगाखिखत ॥ या ॥ श्वनीयददत्ता, विश्व
यमानवाकनीभादधकनीयाविद्या, याधरु गाश्वतानृधु ॥ यथायदगमार्गधलेकुरु
यायकल्यत ॥ लियदंरुसमृद्धय, महानावर्गतालिखत ॥ नि धीमाधवसंयूकं, इयं लिदं वदि
न ॥ सत्यावरुसाखनध, नानायधसर्मन्विता ॥ माधवनसमायूका, वनानृजयूनलिखत ॥ मायावदि

यहाधावा, चलादकन (खना ॥ वचनार्धमूककनी, नागनाजविनाजिना ॥ कवच व
वमनीयगिखामविशास्यकिन्नगलुडक, गिनामालाविरुषिता ॥ रुजधादधसंयूका, ग
कवूकिर्किनीवि ॥ याधकिं गकयान्वच खदागमूधुदिधिर्मखदुरुटवाधधनः
धकदधुकमधुनं ॥ अरुयवनदधेव गऊनाविधनाकनेशमूदिनासिद्धिमधु
ना, गकिरिश्यविवाविना ॥ कूं कूं कूं काननादन, जसयनदवनागधन ॥ अ
थरु ॥ सामार्थवस्था, वदथायविसंकिता ॥ गवनूयीमहादवददथायेविसंकिता ॥ वि ॥
धनीसामहाभव, दकिधवानवर्जिता ॥ श्रुतानृश्रुतदाहि, याम्पसिंहोसनाधिना ॥ त

ली गदवता ४ सर्व, वक्रुसदाम हावना । जंरिनीरुं लिनीतावा, भाहिनीजूरिनी निवा ॥ म
 ल्यजयावर्जिकाच, सिंहदक्षिणकालिका, यचछुउ गवधुच उगना नाकया लिनी ॥ ल
 विगाकिन्न गीमवि, वेगला वाकयदा यिनी ॥ नीलास वखतीहीमा, जे लाझदा
 म न धनी ॥ जे लाझ विजयावधु, नक वाम छिरे नवी । दक्षिणाय वधनी, नाना
 रुद विष्णु विधी ॥ वाक्ता द्याह रे नवा रुद्रगयाह भवच । स्वकृगना धं वदू
 कं ग (धन) यागिनी गध ४ ॥ रका विरिन्न द्यासा, समयाया लनायच । अधान ह्य गध
 सर्व, नानाया विषदाहता ४ ॥ म हावछु हरी नाव, यनर्यनादि गतना । वना लाव

दवी, धन धादि दिवांगया ॥ यथुलाह धिरी लुला नग ४ सर्व महाकृह न । सर्वजीव्या वनकी,
 वरुवन धक्रम ४ ॥ समुसर्वजय लोयू, मु (वेवा) ४ ॥ समर्थिन ४ ॥ चउ विधे जो वनाच, जगत्सावेन
 जंगम ॥ जने ४ ॥ समुदय, सर्व, गुरु व साज लोयू ज नर्थिन दह लय निज गल्लव, म मर्थव
 च न जसा ॥ यदी गजस ४ ॥ याव ४ ॥ समाहित न गहुं लायाय कला महलाच, निर्व गलाहु
 धा गयान ॥ आका गझ यिनी दवा, सर्व संधा यने गुध ४ ॥ महा सीरा यननी, महासान
 खनय दो । महासी दय गुरुग, महामु ल्यवि नासिनी ॥ य अ विष्णु रे न डादि, वन्दिनाः
 याय हा निधी । सर्वनीथ मया द वि, सर्व धर्म मया निवा ॥ सर्व कृग मयायू धा, सर्व दायार्थ साधिनी

महाशयदासीना, ममाकरुलयेदा॥ यथा व्यसवगादवा, सुखं ध्यायन्तं भावनावानव
 नावायि, दक्षिणं चानकुरुवर्ग॥ निनाचानायासावाना, यायधर्मविद्वान्, किमावानविवावध
 यदिकाल्याधुनं नदि किना ४० निनाचाना
 रुक्मीयमा, निनाहवसर्मर्ग, कालि
 यागककाटिना, लालयेव विनस्यन ॥ ८
 काभानयवझामि, गृध्रध्वकमनानिव ॥ ॥ विन्दुगिकाधयेवान, नवकाध, यूधविखेता, ज
 हान, वाह, दलक, दधदादधकीगथा॥ वाणम, दलकलिख, मधुयाकानसविखेता, च

एकवयनानित्या, यादवावितिनृयिना, सर्वसहयासर्वे, विगाह्यागितायना॥ यथा
 त्ययनविश्वं, लीयनलीयनयून ४० वददवमरुमान, नेकगनि, गवने॥ नासाविक, धनीति
 त्या, कान्याकतिसेखया, जूमनखेव
 कमरुदेव, लालया, मियूकन ४० व
 गीसदागिवाव, खझाधुकाटिलझा
 ननगा, कालसकषधीनमशा, यथा किण्ठमखिन, खझाधुकाधुकायन, गाकाल, असन
 नगा, कानसकषधीनमशा, गृध्रदवियवझामि, यत्वायामनयधुन, एकवयनानिकिः

वर्द्धरुदयकागिनां ॥ नित्यानिर्गतादवीच वक्रसखयकागिना वक्रकाटिसहस्रेषु जि
काटिसमेनयि ॥ वरिष्ठेनैव वक्रानि गता दनायिसेदनायि वव कुरु जिह्वा हि हर्यं व हि हर्यं
मध्वनी ॥ लककाटियरुदयू दधमा
भाकदायिनी ॥ नानिगकथयाय्यामी ॥
साकाजागत्स्वयिधी ॥ निलयानिगुध
स्रिय ॥ साकाग नख ॥ अयाकनानवा ॥ अथक न्यायवमा ॥ अथगुध ॥ गुधलय ॥ शयथाविद
यूनायाग्नि ॥ हर्यं कुरु न समनन ॥ नानायाव्यमिदं सर्व ॥ ह्यथ गुरु न गुह्यं ॥ शयवधियनता

सादकाटिगयाविर्ग उलानाया निददमी ॥ अथगुध न गुधलय ॥ शयथाविद
गमिदिरागुधन ॥ अयासामथमादया उवना निवउदमी ॥ अथवस्य न ममानि ॥ नयाकानेव
नयिर्वि ॥ अथनयेयकनोऊन ॥ नयाविद्या
नदारुवना वक्राद्युकागिजननि ॥ महामा
रुतिगयथायिय ॥ अथसकासादरुवा
यववक्रमया ॥ अथमायागुरुविदिगाव ॥ नाथाउउव न वनी ॥ नानामायसव्यव नानाव
यधमयाया ॥ माहयगाउ गत्स्व ॥ अथययववनी ॥ अथयरा ववसननी ॥ गतिर्गकामसुत

के १। सर्वगथायिनायायि चक्रस्माननिवातिना ॥ सो गे हेव च गहना विधयानि विना निता
 वउवोभयनिक्षयं, उलाकव गका निधी ॥ सो का तं विधया दवी, त्रयिणी रा यदायिनाम
 हासंययदानित्या, साकोदकन नृपिनी ॥ यादगादकन नृयधं, विधयाकयवहि
 गां निवाकनाम हाविद्या, यचासाकन नृ
 ह्यकं ॥ न गमूमनव (नयू, विधयाकय
 गायना (सागुनिता नयू, यत्तु सानं मह एव ॥ तत्तु वसा धिर्क सानं, सानात्तानं गनयनं निवनातय
 थादशा, साना ध्यधनं रुवने ॥ तदेवममृगनाम, दवानी धाधननं ॥ तथा समस्त साकुम्भ, दवने

धिनदन ४ विधयायादय ४ सिद्धा, खक्यासर्व विना ४ ॥ तथा ४ सादा त्तन, उलाक वि
 रुवता ॥ खक्याय निता ४ य धालक नव नृ धायय ॥ विधामिगवां मेखाया, नाद्य वाययद रुवान्
 सुवयूगीनना (धर्व, दक्षना विगनाकनीः ॥ विगनाकनमगार्य, उलाक नययदायिनीः
 दगवधमियाय वि, (गायिनायलन ४ यूना ॥ यदिय रुव रुद वि, मगवे विगनाकनीः याजा
 नागिसयुधमा, रुनवाहनं संभय ४ ॥ मनुमा
 उजननी, सर्वमकुय रुदिनी ॥ वदुदाव धिर्गमं, मातासर्वययिना ॥ ययं गा नाम रुवानी, माक
 खयदायिनी ॥ नानया तृतीया विद्या विधय गउवन रुय ॥ नयू, यनदा माक, दारु केवल्यदायिनी ॥ नन

इत नवनाम व. वाव (अविनीयाति नानदाय रुगि सा दवी, इत्यर्थं जानृत्य धन ४१ द्रव्यं नवनाम व. पुत्र
 सर्वं गत्यान् गतिना ४१ अथा काला कर्म यंच, एका सा यंच अ गता ४१ कालिका स मुद्रुर्ग, यो नृणां नव
 गोविना क्रमालिगि मूखा कालि, नव एका कन
 लिका ॥ रं हान कालिका उग्र, एताया दिव्यः
 माहिना ॥ रासा कालि यंच मीच, जूधे गरा व
 रु नो गिना ॥ नवी वा वय वा व कु, वा द्वा दीना उ कालिका यंच कालि म हा म सा, एका सा हि न व
 यिनी ॥ अना मा वे ध व रु ना सा, उग्र कालि य की लि ता गा सा धान, यव श्रामि, उग्र या य रु या य द

क्तिना अथा या रु यि कालि व, दिता या हि ना का
 नृयि धी अना खा कालिका दवी, च उ र्थ य नः
 माहिना अरि न दू या सा ४१ सर्वा, उग्र काली

एत न व सु वे य द्वा, कालिका कूल गानिनी कूट ह्य अ गे सा सा, लीला उ न या व नी ॥ उरु ह ह
 गिया क, नं धा दयि म हा म नू, अ नू या या रु व श्रामि, नू य म थ क नृ यि धीः ॥ विना धा न न व य द्वा,
 रु क वा य क ना रु ना गि सा, सा ध क सि थ
 न, सी म मा वा ध यार्थि ना, उग्र न वे म या या
 य, द रु कालि कूल कर्म, गन वि श व रु या दा
 द्वा, वे न्म कालि क मा नू ग, द मा र्थ कूल क र्धु व, वि रा य ध म ही रु ज न ॥ दि व ध क रु या वा (लो व
 लि र्ज र्ध व रु थ, अ नू नी या थ मा था ना, न रु वा रु रु या द य ४१ दान द्वा धा मू गि ग धा ४१ द्वा म

र्थ, धान या र्ग व न मि न ॥ यि ना म रु न द व
 दा द्वा (ध लो क रु र्ज न ख द्वा धा यि पु न रु या
 दि ग वा ध न दा य व ॥ ग ता ४१ लं का धिया ४१

यथा गङ्गा दवि, कव र्भस्मदादत ॥ गि ग्लाला यम धु मा ला, वउ ह्यं वा ग क यि य । जू ह दि क्क
 ना ह्, विलिखे ला क दा य क ॥ कलि ना ज्ञे द न्ध ग र्व, ग म ला लू क रे व र्व, का ल व ग न व र्ण व लि
 वा ह न म ग न के ॥ वि ता ह् दि क्क य लि खे ला, हा यो ग क ना स न ॥ हि व ध्व न ज ग वा यि, म
 वा यि य ट कि न ॥ सि द्ध न ना रि का ग्मी वः, क र्ण वा गु न्ध व न्द न, ह उ ना ह् ह य न्धु यी
 ॥ सा ज न ल य य र्क न, लि खे द म ग ला क, या म्ठ क ल खे न व म्भ द स्त्रि सु व खे न म न
 ह न ॥ य ति मा र्पा य ट वा यि, ह्म दि ले यू क क द दि, ख म्भ वा थ गि ग्ल ल वा म्भ ला य र्थ व मि र्था ॥
 दि वा र्पा ख म्भ व र्थ व, म ग ला यी ह्म यू ज य न्ना ना गी य, ध क्क या ह्म जा, न व जा नि य ना यि य ॥

[illegible]

रुविनी ४८० त्रिभिनादियथा ननयाय गय नमम्य द ॥ यूनयस्य उय दीर्घा वाचनित्य विधाय ग ॥ स
 वस्य कावधं वभात दहं कन निदिन ॥ रुगलिं गत्य संसर्ग किरा विनि ४८० नयमान् । यदा गदा जल
 कालकान्त्या रु न गत्य ग ॥ यूनयया य विनी ॥ मूर्कः ज्ञान भूत कृष्णयिथ खन्ना धुका टिन
 नीरु के वारु सुनूयिधी ॥ उक्ता नाना विधे वा ॥ हं की ज थ सु क न ज ग ग कल कल व कर
 यन द टा का गं य ध य ग ॥ दध्यत य न म ग ॥ नो ज्ञा का गं यो य निष्ठ नि स व रं न सो द म
 य ग र व नि रि न ख ना का ॥ रि न ग र व रं ॥ य थ द द ह ग ग ज व द रु ना ॥ व न न न ॥ यो य नि
 स नि स व रं न सो द म य द म रु ॥ अ न ग व म रु ग नि नि वि क ल्य स द र वं ॥ ए व स चि न म

गीनिक व न ॥ अ न नू य उ व च्छामि, हे न द्या या म् दि क स्मि न् ॥ नि त्या नि व रं नि ४ ॥ गी नि नु व
 य न मा ध य ॥ उ न नाना वि ना द वा, ध र्म ना जा य वे य न ॥ सं य दाय क म ॥ व, द वा रं न य रं
 व वा ॥ च उ रं द्या स ना द वा, म ह रू क
 द द दाय वा ॥ अ ला ट व क म अ र म नि
 स्थि व म्म वि ॥ वि ना ॥ अ य च र्म क टि व
 गं का सी, त क का च न सं य रा, ॥ यं च व क्ता वा नि रा मा, रि यं च न य न रू ना ॥ शी य द्वा र ल
 ल जि द्वा, नि म न रा रु ॥ ग द वा ॥ वि क वा ला स न स्था ला, व क व क्ता स न हि ना ॥ नो दी त

न ॥ नृत्तरेव वनामान्, सर्वचक्रवर्तिनः ॥ गणेशकृपाकिन्वा, गणेशल्लेखाणि
 वाममात्रे ॥ समानाश्च, न गेद्विघ्नः ॥ क्रिया ॥ अक्षयकृपादीय, वक्राक्षवतदन्वग ॥ १॥ व
 कर्षस्तु नैव, सिद्धस्त्वमभिमादय ॥ मनीविनासमानाश्च, गकायययदलः
 वान् ॥ यद्वामाय ॥ गि ॥ य, याविहि
 माय ॥ ॥ दक्षिणमायाविष्णुमिः
 नि ॥ गीयनिलगिका ॥ निनालभ्यवनीनित्या, अर्धार्धनक्रिर्विद्व ॥ सिद्धासुनगतानित्यानि ॥
 गीनकवर्चिका ॥ वेगन्यरेववीकविउककालिनीकवनारुवनीकालिकाकविदधान

उद्धमाननसुखकालिकाकर्म ॥ यमदलिखनममर्त्ययल्लेखकृपागिष्ठगायनसिर्तययः
 अतविधिवत्यनमध्वनी ॥ सुनिविद्यैषमागंचयावयावकिवेवहियूक्तकयुजिनंजन ॥
 दकालिकूलकर्म ॥ समग्रयुजिनंजनका
 लेनकनयत्तदा ॥ तं कालीकालिकाकवी
 नकालिसदसातय ॥ न कालिसदसाय
 इयामहायागुयन ॥ सुवे ॥ महायागाविजानीहिकालिकायथसंविना ॥ अर्धमर्त्यजया
 वाममलार्चनमातृयन् ॥ कलाविश्वनाकालियुजिनयाययनन ॥ दवगासननचिद्वीव

महायागुरुसूक्तयथ ॥ यश्च काल्या उच्यते न च नृकीयश्च नृकमात्र ॥ नृक ॥ ४५ वग नरु डं कालिकाक
मयूजने । शार्थं स्वर्गसुखं माख्ये माझा सिद्धिरुवद्वै ॥ सत्यं सत्यं नृक ॥ यद्विस्तृत्य मगद्वीमर्ह ।
नृक ॥ यथा कृत्वा नृक ॥ यमुह उवाच कृत्वा नृक ॥ ४॥ यनियमं कवलं नृक ॥ सिद्धि मवाप्नुया
ॐ ॥ यद्विस्तृत्य स माख्ये कालिकाया कृत्वा लक
मा गते ॥ ४॥ गायत्रीयं यय नृक ॥ न दद्याद्यस्य
मया उवाच । नृक ॥ यद्विस्तृत्य स माख्ये कालिकाया कृत्वा लक
उवाच यथ मंदला गत ॥ ४॥ यद्विस्तृत्य स माख्ये कालिकाया कृत्वा लक

रुदा विष्णुलाका वक्र नृयाय काशिनी ॥ कामधनी नृडगकी यद्विस्तृत्य स माख्ये कालिकाया कृत्वा लक ॥
वेष्ट विनाया काम नृय निवाशिनी ॥ गकी धनी रणगीच जाल भवय निष्ठिता खड्ग गकी ॥
समूलासु यी ० गद्वल विगहा ॥ उवाच नया ० निवया यनं वक्रात्मिका गिवा ॥ स
वचकं स्वनी सर्वयी ० गी मंग विगहा ॥ सर्व मं कुनी खे सर्व दव गी दिव्य विगहा
यदाम्नाय धनी नित्या निर्वसानिय विग हा ॥ नित्य धाद ग विद्याया नवचकं यवस्ति
ता नवचकं धनी नित्या नव काष्ठा ग सक्तिता ॥ ४॥ लाक्ष माह नृकं सर्व साय निवृत्त नृक ॥
सर्व मं कारु नृकं सर्व सोरा यदायकं ॥ सर्वार्थ साधनं नृकं सर्व नृका क नृयनी ॥ सर्व काम

यद्वर्क, सर्वसिद्धिदायकं ॥ सर्वानन्दमयवर्क, नवमवर्कनायिका सर्वोच्चैर्दत्ता
तल्लीवर्कमुदाहरं ॥ गिरुनागिरुनगीच, सुन्दनीयुनवासिनी ॥ श्रीमालिनीतिदाभा, महा
गिरुनरुनवी ॥ जूनकयवतावृन्द, लीनावर्कसूर्महिता ॥ वेन्दवचलिका ॥
व, अंगनालक्षकावर्क ॥ दिदसाव, वमचम, नागयुगसूतवर्ग ॥ यद्वर्क
दगसिन्धुना, वउनमुगुधयर्क ॥ नका, यूकवउर्कव, येलावर्कगणयार्चनी, हि
नध्वनजगताम, मलोयर्कथरुर्क ॥ कोणीयसुदिलवापि, द्वाक्युधमलिय ॥ सर्वगोर्ध
यूसमान, सर्वयङ्गुदिकित ॥ सर्वद ४ सर्वविलाका, महेश्वरसमारुवर्ग ॥ श्रीवर्कक

विमयानिया, स्नानभाक्युदायनी ॥ महार्णययुदाविद्या, साकादकनवृषिणी ॥ वादभाधर्म
विद्या, गीविद्याकथितायिथैयूना ॥ नीधिर्नानकवर्ककार्य, वीवर्कसूयथयिथ, या ॥ वयोयधिक
येव, नायिनकधीया, गीविद्यावादभाक
ठ ॥ वाङ्मनाङ्गुदयानि, या ॥ वयोयधिः
आधर्व, नागलक्षगुधयार्क, वीर्यकानि
धर्किववीमिर्ग ॥ वानासायधमाविद्या, गगावाङ्मनवीरुता ॥ र्णययुदागीयदाव, गगागिरु
नरुनवी, विन्दुमालिनीविलखा, दल्लखागायनाकना ॥ वद्वर्गनवर्कयव, लायामूडागि

कृष्टिका यैवमियैव कामिन्ना, विद्याऽशी कामनाजकं ॥ बादभाषमलविद्या, सावैशायनमा
यनायनायूकावयासादऽभम्वंसमदादतं ॥ अविमादिमहातिदि, सगनाययुकिर्लीगाऽ
यैवसिंहासनसंया, महागियूनसुन्दरी ॥ साकाकागल्लुयाव, वैशायनवद
वगा, खिचसुत्रयिधानिया, यकनिऽयनमंघनी ॥ सर्वजीवसुत्रयाव, साम
लिगल्लुयिधीसुत्रयिर्लिहउरुगा, यानिनीत्यविधीयत ॥ सिंहासनसुत्रः
यासा, उद्धमार्गमथादितां ॥ निगीयनागकुशीडवमायऽ ॥ अशमायगृष्ट्यत्वं सा
वनीजिनमारुका, अणवक, मेविमलिकनीगीयल्लयदा ॥ बोधमार्गनिनाटका, निर्वग

धामवर्धुविर्वितय ॥ सर्वदंष्ट्रकनालावशिन्नगालिमनादिनी, पूर्वगकूटिलारीगा, कालाया
शीमखालमा ॥ यिंगलार्द्धगजाठाय, चलायकन (गयना, नानावर्त) - टिपीश्वर कायालिमालि
नी ॥ सकाविंगनिमूदय, वकविष्मसंः युगावजाभियूषसंयुक्तां निनामालायका
निगा ॥ क्लिउलवगिका कार्यखड्गयागंचन किर्काखकागर्मंघुपेनूयंलकुघीठवसुख
ना ॥ वालयनच (जेलच, कंकालनकूर्वन भासयच, कूटनीवंगंधदगं उदिकायू
न ॥ आवक्रियायैवदंष्ट्रं, गूवाखनचकं गनीवसुक्रमं वदमर्दं विगनिवामवाकुरि ॥ वि
उलवगिका कर्हगर्जयकं गंददकं नल्लयुधचक गं, गिधुल्लद्वनागनं ॥ यैवयधुयठा

नृधवश्चमहाविद्या, आनया गमनरुमं। यागविज्ञानमाश्रय, साधक ४ सिद्धिराशु वरा। नीलायनदल
 ना, नीवननविनिर्मिता। नूनल निरुता गायत्री। निर्मदलसंरुवा। दधवकुमहाकोली, सुके विनगि
 लावना। जूहालवगतादव, उजाद देनना। नमो। दीयकं सुवचकं च, चदयो। गधनीम
 ना, आनिर्मय महावर्क, निर्वाणयददायि। ना। गदध ४ सिंहवदनं, धनवधुं सुहाखनं।
 रुद्रवर्कचनदध, कस्यस्य कर्षधील्लर्ग। क। पिउस्यसुखवामनकवधुमहाखन। काल
 वरुवरुवदके, धूमवधुं रुयानकं। ना। र्कवर्कचवामुउयिं गवधुं ववधुं। दकि। वमकना।
 लाव, हनिता नय किर्तिनं। गजाख्यवामकयार्क, लोववधुमहाखन। ह्याख्यदक। वकात्या

मूकिरुनयना। नकावा वधवैदेगी, नाउसूयस्य काटय ४। याग मर्ममहाविद्या, नय
 कास्य कदावन। विना गुनससावध, यीविद्यायादधकनी। दल। उजाय गयसु, सरु
 काया गिनी गले ४। यी गुना ४ कयया। लक्ष्मी, नयकास्य कदावन। विना गुन
 यसावध, उयानेव कदावन ४। यी गु। ना ४ कयया लक्ष्मी, सर्वसासकदायिनी
 सुधातनंगिनी वग, गदवानुयदाया। नि॥ सोरायरायसंयना, कृताकृगलका
 यिनी। उवननय सोराय, ये लायकर्मनागथा। यनवधुं निलानल, ददानिजगमूलमं। या
 दधममहाविद्या। उकिमूकिरुलेयदा॥ नि ४ सुवनिमहाविद्या, विरुलिगायथायिथ। साका

केशानन्दवनाय ४॥ वाजसंधादियङ्गुल्य, रुलं लविकर्नरुवत । वामदक्षिणया (गन, सु-
 नादिवी, धासुता ॥ सुन्दरीदिवावधायको, वामदक्षिणधामसर्न । अविनवारुर्वेद्यम ४ सर्वक
 मानसस्य ४॥ दक्षिणवानया (गन, रि
 धुसिदिरुर्नलरुत ॥ वयाकेदक्षिणवा
 आदिकसुतृयिणी ॥ गेदवम्विजानिहाः
 वाच दूयधसंस्मिता ॥ उनीयासामहाविद्या, साक्षाजगत्सुतृयिणीवकुकाटिसुतृयि
 का ॥ काटिगमेनयि ॥ वामिर्कुनेवगकाति, गीविद्यायाउगादनी ॥ लविकविद्यासुतृयासा, उकि

यच ॥ धानेनूविह २ विद्याय, धानयायनमधनी । ॐ नालसुमुख्यं, दक्षिणार्द्धधुधविधी १॥
 नारुयकर्ननेम्य, सुनिधुलकयालक, दमनूवाक्रमालाव, धर्किरेवकनाम् ३ ॥ ॐ क्वायं
 येव, खरुहर्कसु (गतिनी महायगाय
 नगाव, सुधुमोलाविरुयधावासुकीर्ण
 नमालाव, हावेमोदारुनधरुयिगा ॥ विधन
 खनीदवी, सुधालावध्वययायु (सुखनातिविद्याना, साहकानानजायुता ॥ गिनीयुधुलिय
 यो ०, लक्ष्मीवेनमममानक । ॐ नानाधिनाविद्या, वक्रदूयावगाविधी ॥ सुवन्मायतिविद्या

गा. पूर्वदवर्षिय जिगा. ॥ श्रीस्वनीसर्वविद्यानी. महाराष्ट्रसुववरा ॥ नानाद्वयधनानित्या. व
 क्रनयावगानिधी. जया जयनी विजया. जजिगाना नर्तिका ॥ आश्वनी कनानाच. नाज
 शीखुवन श्वनी. नकदना विष्णुनाखी. कामगी वधुमालिनी ॥ विष्णुकिष्कादामन
 शी गंधावन नयनायिका. नन्दी वेवम. हाकान. रुगी वेवकुलालिका ॥ नवनाट
 स्वनी गण. वउ ४यं च वसाविता. वः. कुरुयादवदवा. हेनवाळकमारुका ॥
 नाट श्वन ०० ताख्यागा. हेनवाचकया लक ४। कुरुविष्णु श्वदूक. यागिनीमारुकाळक
 वक्रा ध्यायो ४ययुर्ग. कृमावी कामदा सदा. नृत्तमानेयूना दवा. हेनवामारु

नृत्ता निधी ॥ नाजनाजसमाउला. सुन नाजसमायिवा. हृक्का नृवियूनी रागात. ज
 बाधमायूयात ॥ कदाविश्यायिताउला. कदाविल्लुनूषी रुदगा. विष्णुनूदधसकन. द
 सा सुवानि विना गयन ॥ जगद्धाकृव. नोमाया. माहेयत्तसुनासुनानु जूतः
 यातूयिवाहला. सुसुनीवा नूहासिनी ॥ कृम (अचउ बाकि. खेधुदूकने (श्वनी
 रिनेगासर्वरुयोद्या. वानूकं नमगान. मा ॥ यागाकृनं ०० द्याय. येववा धधन
 र्दना खर्कविष्णुनूद ०० क्षमं च मंदययादिका ॥ सदा निवाखययक. संहितायनमं श्वनी।
 यूना गकि सुदनीनि. शिखु नगाति गायन ॥ मुरुभाकयदा दवा. यनवमस्वदूया निविद

गगकाटिसहस्रकं॥उतवतालकाकिच्य४वगकानाकसाखग॥४॥रुनवाकाक८५॥
लुकागनूउवका४॥४॥गलिकंकठियू॥नानादूयामहावनाज्जामायझवदगिरु=
मूलनीउनिनूलनी॥०॥निगीयनार्गुणउलेनामा॥लेनामायकालीकम॥॥उदमिहा
सनवध॥लेखखयसुवकं॥सुववकं॥सुननिया॥सुवनायययुजिना॥स
वसिहासनमया॥०॥गनासनसंमिता॥यनवधसुवनामाया॥दवीनानायवी
लगा॥निडावुदिकमाख्यागी॥क्यालका॥सुनिधगि॥यझासी॥नियरा॥रामा॥जागिनस्याय
दीउली॥यस्या४५॥थतमा॥०॥साकालकायतिहवत॥यस्यावाकमसुनना॥यस्यामाना

क्यमद्ययमनीगम४कूनचयालिजानीय॥कूनीकामामनंथा॥यूयमालादिछिमं८५॥
सुलिकवदनीकर्मदलुगुवावेवयेयुयुलिरुयायहं॥नधावरुंकंदलीवेमासुखंदगु॥
रुनं॥विजयलरुलंगुचीविउनीदक॥वाकुरि४॥आखवर्मयनीथीना॥कालव
मालुवियका॥किंकिनाजाल॥भराश्रीः॥वावदीगनिनादिना॥नूयनानावनिधा
याद्यद्वानावरायभा॥कनकागनक॥सुनाम॥हालिकन॥भरना॥मंछुमाला
गनं५॥आयादीनाविलंविनी॥वकयममयीमाला॥उककायालिमासु॥॥कावीकदा
वकायदाकठिदयाविनाजिना॥खमरुगीवनकध॥यागयलाहनियका॥शोथागहः

वाव॥ दवदवमहादव सर्वरूपयनमध्वनः॥ अष्टादशमिदमथ कालाकलमाह्वं॥ मानसैक
 यनः॥ गोव लामहर्षधजायन कथंसाकालिकादवी गगकाटयसदगः॥ ननदुदुनेकायि नेमु
 गयनमध्वनः॥ सर्वकालिकमागित्य स्मिगस्या नसगमनः॥ चकधनीकेकरुद कावसुवा
 धिकागिना॥ कमरुदंकेलाह्वं केथंरुजा कर्मयरा गस्यावननदवगं लरुवाकिम
 हाह्वं॥ ॐ हाह्वंउवकिंरुका साधकः॥ नमध्वनः॥ कथंकासीकनालमा सानमा
 कालयसना॥ निर्मुधनिष्कलानित्या निव (नित्यथादिता॥ काटिरुदलुह्वं वरुयदिनग
 कर्मे॥ मथमाभने गदविः॥ नायिकाः॥ वदगं केन यस्यावननसुकेन कालिकायुजिनरुवग

गायीसंक्रिययसुगुवा गारुवजूनः॥ लानाचाकनसिद्धार्थसुसगगमकिनं॥ यगयगक्रियमंन
 गणलोर्ग्ययवरुने॥ कधमापादकसि लुजयले अ नयिदिवतु (वनगथाहामानमहावृहिरुव
 कुर्वंनगाद्वकुजयनमगीगगाद्वहामययियथ दगीक्रयनिसुदंहासकाहनगवियनि॥
 जह्वायश्चगंमनिगगाद्वहामययुनः॥ नः॥ यश्चगंजह्वासिद्धार्थवाक्यगथा॥ म
 रुकेकधवाहोव कृतादीयस्यगरुने॥ नूयामा नगंरुलात लुनयस्यदीयने॥ दुरु (गजा
 यनसत्ययातिनाममवाक्ययाग॥ सिद्धार्थगुमनूवेवनकीकलेयगगयं॥ हामाकवमहायीतिः
 नाभेमेयु वियातिसुजायने॥ हामवाजः॥ गताश्चवहामयस्यकवासनं॥ उमहाजायनगीध्वं

कुलमाद्यनाचिर्गं ^कसंस्तुतनिष्ठानां जययुक्तासमन्विता ॥ दिवाचव क्रवथचिनाशो कुर्याद ॥ थ
 कुर्याकुर्यात्ताहिउषागे लयूकं यचननेन ॥ कृत्वागिम धूनशका इष्टगालरुने शिर्य ॥ यिष्ट
 नयाकुरिक्तलार्जुगुष्टामष्टकावधि ॥ जूक्ति यश्चर्गर्गं कृत्वा स कलम्यनिनयनि ॥ सिद्ध
 मरुनायूकं गताष्टय निमक्तिर्ग ॥ कृत्वाकया कनदत्वाञ्जविष्टावष्टकं कुरव ॥ नाजिक
 धर्मजं कानंदगंधावायिमक्तिर्ग ॥ मरुना गय समनेस्तामागननिधिर्ग ॥ गेलमा थद्यनमा
 थजूष्टधावाहिमक्तिर्ग ॥ यानाना रिद्धदानं वयुष्ट ॥ निवस्मनघटमूष्टजूष्टारुनः
 गर्गजयत् ॥ हिताहिगंयुकार्ययू स्वयनेदादयत् ॥ ७ ॥ लन ॥ ७ ॥ दा ॥ ७ ॥ व ॥ ७ ॥ ल ॥ ७ ॥